

1. विवाह भोज का दृष्टान्त

मत्ती 22:1-14

शुरुआती प्रश्नने बट्टए या पर्स से कुछ लेकर अपना परिचय दें जो आपके और आपके परिवार : के बारे में कुछ का वर्णन करता है।

वैकल्पिक शुरुआती प्रश्न [ऐसे समूह के लिए जो एक दूसरे को जानते हों]: क्या आप कभी किसी शादी में गए हैं? इसके बारे में एक ऐसी स्मृति साझा करें जो मज़ेदार, अनोखी, रूमानी हो, या फिर कुछ ऐसी बात जिसने आपसे मसीह के विषय में बात की हो।

यीशु दृष्टान्तों में क्यों बात किया करता था?

यह शब्द *दृष्टान्त*, यूनानी शब्द *पैराबोले* से आता है, जिसका अर्थ है "तुलना, चित्रण या सादृश्य"। सुनने वालों की कल्पना के लिए आध्यात्मिक सच्चाई को स्पष्ट करने के लिए रची यह एक सरल कहानी है। एक तस्वीर एक हजार शब्दों के बराबर होती है। जब यीशु से उसके शिष्यों ने पूछा कि वह दृष्टान्तों में क्यों बात करता है, तो उसने जवाब दिया, "तुम को स्वर्ग के राज्य के भेदों की समझ दी गई है, पर उनको नहीं। मैं उन से दृष्टान्तों में इसलिये बातें करता हूँ, कि वे देखते हुए नहीं देखते; और सुनते हुए नहीं सुनते; और नहीं समझते।" (मत्ती 13:11, 13) प्रभु लोगों को आत्मिक सत्य को समझने से रोकने की कोशिश नहीं कर रहा है, हमारे प्राणों का शत्रु ही वह है जो ऐसा करता है।

एक दृष्टान्त आत्मिक वास्तविकताओं को इस तरह से साझा करने का एक तरीका है, जिससे वह हमारे मनो में मौजूद उन छलनों (रुकावटों) से बच निकलती हैं जो हमें नए तरीकों से देखने से रोकते हैं। यीशु हमारे मनो को नज़रंदाज़ नहीं कर रहा, लेकिन वह हमें अपनी नज़रों से चीज़ों को देखना सिखा रहा है। यीशु परमेश्वर के राज्य की सच्चाई प्रकट कर रहा है, और निश्चित रूप से, एक और राज्य है जो इस सच्चाई का विरोध करता है। हमारे प्राण का दुश्मन सक्रीय रूप से हमारे मनो को सच्चाई के प्रति अंधा करने का प्रयास करता है, और यीशु इस बारे में जानता था। (2 कुरिन्थियों 4:4)

दृष्टान्तों में बात करने से यीशु ने जो हासिल किया वह था पूर्वनिश्चित विचारों को चुनौती देना और मुद्दे की जड़ तक पहुँच! इस मामले के सार को सही करने के लिए था! उनकी शिक्षा हर किसी व्यक्ति के लिए थी। यह एक ऐसी बात थी जो उसकी शिक्षा को उनके दिन के अन्य धार्मिक शिक्षकों से इतना अलग बनाती थी। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप कितने चतुर

हैं, आपका सामाजिक स्तर, उम्र या लिंग क्या है, यीशु आपसे बात कर रहा है! यीशु हमेशा हृदय से प्रतिक्रिया की तलाश करता है। किसी व्यक्ति का दिल या आत्मा बहुत लंबे समय से कठोर, बिना हल चलाई भूमि की तरह है जिसे परमेश्वर के वचन के बीज बोए जाने से पहले तोड़ना आवश्यक है। (होशे 10:12) यह कहानियाँ मन को चुनौती देती हैं। यदि किसी व्यक्ति का हृदय प्राप्त करने के लिए खुला है, तो दिल और इच्छा को स्पर्श कर प्रेरित किया जाता है।

अक्सर दृष्टान्तों पर विचार और मनन करने की आवश्यकता होती है, और केवल तभी, जब किसी व्यक्ति का हृदय सुनने के लिए खुला होता है, वह उसे "समझ पाएगा"। ज्योति चमकती है, और एक व्यक्ति रोज़मर्रा की कहानी में छिपे हुए आत्मिक सत्य के बारे में जागरूक हो जाता है। लेकिन जब एक व्यक्ति इस आत्मिक समझ को हासिल कर लेता है तो उस व्यक्ति की एक ज़िम्मेदारी ठहर जाती है। अर्थात्, जब उस व्यक्ति को आत्मिक सत्य का अर्थ प्राप्त हो जाता है, तो वह उस सच्चाई को अपने जीवन में जीने के लिए जवाबदेह बन जाता है! परमेश्वर के वचन के बीज के सुने जाने से काफी समय पहले से ही प्रभु के द्वारा हृदय की भूमि को तैयार किया जाता है। यही कारण है कि प्रभु अक्सर हमें अपने जीवन में कठिन परिस्थितियों या कठिन "मौसमों" से होकर जाने की अनुमति देता है-- यह घमंड और हमारे हृदय में पवित्र आत्मा के काम के प्रतिरोध की कठोर मिट्टी को तोड़ता है।

यीशु के दृष्टान्त भी हमारी आत्मिक परिस्थिति को प्रकट करते हैं। इसीलिए यीशु ने अपने समय के फरीसियों और धार्मिक अगुओं से बहुत अवांछित नकारात्मक ध्यान आकर्षित किया। यीशु एक कहानी बताता, और यह एक दर्पण में देखने की तरह होता। वह अपनी सच्ची अवस्था को नहीं देखना चाहते थे, और वह दीन होने का चुनाव करने की बजाय अपमानित महसूस करते। आप में से बहुत से लोग जो इन शब्दों को पढ़ रहे हैं, अपने जीवन की परिस्थितियों में पीछे मुड़ कर देख सकते होंगे कि जब आप कठिन परिश्रम या मुश्किल हालातों से गुजरे होंगे, तब आपने अनन्त काल की बातों को खोजना शुरू किया होगा। क्योंकि वह जानता है कि हमें बिलकुल किस चीज़ की आवश्यकता है, प्रभु हमारे दिल को तैयार करने के लिए अपने पास उपलब्ध कई साधनों का प्रयोग करता है। मेरी आशा और प्रार्थना यह है कि, जब हम दृष्टान्तों के माध्यम से यीशु के इन शब्दों का अध्ययन करते हैं, तब हमारे हृदय की आंखें खोली जाएंगी और प्रभु अपने मार्गों को समझने के द्वारा आत्मिक उन्नति लाएगा। दृष्टान्त उसकी संतानों को "राज्य के मार्गों" के विषय में सिखाते हैं। जबकि हमें उसके भोज के लिए आमंत्रित किया गया है, आइये हम अपने हृदय खोलें और उससे माँगे कि वह हमारे लिए अपने मार्गों को उजागर करे।

विवाह और भोज का तैयार किये जाना (मत्ती 22:1-14)

¹यीशु फिर उनसे दृष्टान्तों में कहने लगा। ²“स्वर्ग का राज्य उस राजा के समान है, जिसने अपने पुत्र का विवाह किया। ³और उसने अपने दासों को भेजा, कि निमंत्रित लोगों को विवाह के भोज में बुलाएँ; परन्तु उन्होंने आना न चाहा। ⁴फिर उसने और दासों को यह कहकर भेजा, कि ‘निमंत्रित लोगों से कहो, देखो; मैं भोज तैयार कर चुका हूँ, और मेरे बैल और पले हुए पशु मारे गए हैं; और सब कुछ तैयार है; विवाह के भोज में आओ।’ ⁵परन्तु वे उपेक्षा करके चल दिए: कोई अपने खेत को, कोई अपने व्यापार को। ⁶औरों ने जो बच रहे थे उसके दासों को पकड़कर उनका अनादर किया और मार डाला। ⁷तब राजा को क्रोध आया, और उसने अपनी सेना भेजकर उन हत्यारों को नाश किया, और उनके नगर को फूँक दिया। ⁸तब उसने अपने दासों से कहा, ‘विवाह का भोज तो तैयार है, परन्तु निमंत्रित लोग योग्य नहीं ठहरे। ⁹इसलिये चौराहों पर जाओ, और जितने लोग तुम्हें मिलें, सब को विवाह के भोज में बुला लाओ।’ ¹⁰सो उन दासों ने सड़कों पर जाकर क्या बुरे, क्या भले, जितने मिले, सब को इकट्ठा किया; और विवाह का घर अतिथियों से भर गया। ¹¹जब राजा अतिथियों को देखने भीतर आया; तो उस ने वहाँ एक मनुष्य को देखा, जो विवाह का वस्त्र नहीं पहिने था। ¹²उसने उससे पूछा, ‘हे मित्र; तू विवाह का वस्त्र पहिने बिना यहाँ क्यों आ गया?’ उसका मुँह बन्द हो गया। ¹³तब राजा ने सेवकों से कहा, ‘इस के हाथ-पाँव बान्धकर उसे बाहर अन्धियारे में डाल दो, वहाँ रोना, और दांत पीसना होगा।’ ¹⁴क्योंकि बुलाए हुए तो बहुत हैं परन्तु चुने हुए थोड़े हैं।” (मत्ती 22:1-14)

सबसे पहले, हम जानते हैं कि एक राजा है जो अपने बेटे और सभी आने वाले मेहमानों के लिए विवाह-उत्सव की तैयारी कर रहा है। यह दावत या भोज, उन लोगों के भविष्य का प्रतीक है, जो क्रूस पर मसीह के सम्पूर्ण कार्य को अपने पापों के कर्ज़ के चुकाए जाने के लिए प्राप्त कर चुके हैं। प्रेरित यहून्ना ने भी आने वाले उस समय के बारे में लिखा था जो सच्चे विश्वासियों के लिए आगे है:

⁸और उस को शुद्ध और चमकदार महीन मलमल पहिनने का अधिकार दिया गया, क्योंकि उस महीन मलमल का अर्थ पवित्र लोगों के धर्म के काम है। ⁹और उसने मुझसे कहा; “यह लिख, ‘कि धन्य वे हैं, जो मेम्ने के ब्याह के भोज में बुलाए गए हैं;” फिर उसने मुझ से कहा, “ये वचन परमेश्वर के सत्य वचन हैं।” (प्रकाशितवाक्य 19:8-9)

ऊपर के खंड में ध्यान दें कि जिन लोगों को आमंत्रित किया गया है, उन्हें पहिनने के लिए वस्त्र दिए गए हैं, वस्त्र जिन्हें धर्म के कार्य कहा गया है। हमें एक क्षण भी ऐसा नहीं सोचना चाहिए

कि हमें आमंत्रित किये जाने के लिए कड़ी मेहनत करनी चाहिए। नहीं, उस मेज़ पर हमारी जगह पूर्णतः सेंट-मेत में परमेश्वर द्वारा दिया एक उपहार है। लेकिन, एक बार जब हम परमेश्वर के अनुग्रह को स्वीकार कर उसके सुसमाचार पर विश्वास करते हैं, तब हमें हमारे भीतर वास करते आत्मा के कार्य के द्वारा यीशु की समानता में रूपांतरित किया जाता है। हम मसीह की सेवा करने और उसकी महिमा के लिए भले कार्य करने के लिए उसके साथ अपने प्रेम संबंध में सुरक्षित हैं। **क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं; और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिये सृजे गए जिन्हें परमेश्वर ने पहिले से हमारे करने के लिये तैयार किया। (इफिसियों 2:10)**

जब हम इस भोज की तैयारी में हो रहे कार्य के बारे में सोचते हैं, तो हम अक्सर उस मेज़ के बारे में सोचते हैं जो कि तैयार हो रहा है और जो भोजन उस पर है, लेकिन मुझे लगता है कि इसका मतलब इससे कहीं गहरा है। परमेश्वर की तैयारी का कार्य उन लोगों के जीवन में है, जिन्हें वहाँ आमंत्रित होने के लिए चुना गया है। यीशु ने कहा, "मेरे पीछे आओ, और मैं तुम्हें मनुष्यों का मछुआरों को बनाऊँगा" (मत्ती 4:19)। जब हम उसके पास आते हैं और उसके पीछे हो लेते हैं, तो वो हमें वह **बना देगा** जो होने और करने के लिए उसने हमें बुलाया है। उसके चेलों के सन्दर्भ में, यह उन्हें मनुष्यों का मछुआरा बनाना था।

यदि आप परमेश्वर के हैं तो वह आप में कार्य कर रहा है, आपको स्वयं की छवि में रूपांतरित करने का कार्य (गलातियों 4:19)। जबकि इस संसार के अंत में एक वास्तविक भोज होगा, इस भोज की तस्वीर घनिष्ठ संबंध की एक तस्वीर है। हमें संसार के अंत तक इंतजार करना की आवश्यकता नहीं। मेरा क्या मतलब है? अगर मैं आपको अपनी ज़िंदगी के सबसे अच्छे समयों में से एक का वर्णन करने के लिए कहूँ, तो आप में से बहुत से लोग परिवार के रूप में एक मेज़ के चारों ओर साथ भोजन खाने के किसी घनिष्ठ समय का विवरण देंगे। एक साथ भोज करना वचन में घनिष्ठता की एक तस्वीर है। यीशु ने एक स्थान पर कहा,

“देख, मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूँ; यदि कोई मेरा शब्द सुनकर द्वार खोलेगा, तो मैं उसके पास भीतर आकर उसके साथ भोजन करूँगा, और वह मेरे साथ।” (प्रकाशितवाक्य 3:20)

यीशु यह कह रहा है, कि जो लोग पुकार को सुनते हैं और अपना हृदय खोलते हैं, वह आकर उनके साथ घनिष्ठ संबंध का आनंद उठाएगा, जिसे आम तौर पर मेज़ पर उसके साथ बैठ भोजन करने की तस्वीर के द्वारा दर्शाया गया है।

विवाह के लिए आमंत्रण (पद 3-4)

³और उसने अपने दासों को भेजा, कि निमंत्रित लोगों को विवाह के भोज में बुलाएं;

परन्तु उन्होंने आना न चाहा। 'फिर उसने और दासों को यह कहकर भेजा, कि 'निमंत्रित लोगों से कहो, देखो; मैं भोज तैयार कर चुका हूँ, और मेरे बैल और पले हुए पशु मारे गए हैं: और सब कुछ तैयार है; विवाह के भोज में आओ।'

मसीह के समय मध्य पूर्व में, धनी लोग अपने द्वारा तैयार किये जा रहे विवाह के भोज के लिए सभी लोगों को एक सामान्य निमंत्रण भेजते थे। दिन निर्धारित किया जाता था, लेकिन समय नहीं। ध्यान दें कि तीसरे पद में कहा गया है कि दासों को उन सभी लोगों को बुलाने भेजा गया था जिन्हें आमंत्रित किया गया था (यानी, भूतकाल में)।

आप लोगों को भोज में आमंत्रित किये जाने के लिए भेजे गए शुरुआती दासों में किन्हें मानेंगे?

सभी आम लोग जल्दी आ गए; वह अपने बेटे के विवाह में राजा के आनंद की खुशी का हिस्सा होना चाहते थे। अधिक प्रतिष्ठित अतिथि राजा के दासों के आने के लिए इंतजार करते कि वह आकर उन्हें बताएंगे कि अब सब कुछ तैयार है। राजा की इस सोच के कारण कुलीन अतिथियों का समय व्यर्थ नहीं होगा। वे तभी आएंगे जब समारोह शुरू हो रहा होगा। पहले से भेजे गए दास शायद यहुन्ना बपतिस्मा देने वाले की सेवकाई का प्रतीक है, और फिर प्रभु यीशु (यशायाह 42:1), स्वयं दूल्हा।

तीसरा पद हमें बताता है कि प्रतिउत्तर आने में असमर्थता होने का नहीं है, लेकिन आने के लिए इच्छुक नहीं होने का है। राजा के अनुग्रह पर ध्यान दें। जब शुरुआती दासों ने उन आमंत्रित अतिथियों से जो नहीं आएंगे, न आने का इनकार पा लिया, तो राजा ने अपने दासों को दूसरी बार भेजा, 'फिर उसने और दासों को यह कहकर भेजा, कि 'निमंत्रित लोगों से कहो, देखो; मैं भोज तैयार कर चुका हूँ, और मेरे बैल और पले हुए पशु मारे गए हैं: और सब कुछ तैयार है; विवाह के भोज में आओ।' (मत्ती 22:4)

आपने अपने जीवन में किन तरीकों से परमेश्वर के निमंत्रण को सुना है? क्या आप किसी विशेष उदाहरण या परिस्थिति के बारे में सोच सकते हैं जब आपको उनकी बुलाहट का एहसास हो रहा था? परमेश्वर ने आपके पास कितनी बार अपने दासों को भेजा है?

संसार के राजा द्वारा मनुष्यों के स्वयं से पुनः मेल हो जाने पर उसके द्वारा व्यय किये मूल्य के बारे में सोचिए-- लोगों के पापों का भुगतान करने के लिए क्रूस पर स्वयं अपने पुत्र की मृत्यु तक। क्या आपको नहीं लगता कि वह अपने दासों द्वारा दिए निमंत्रण की अस्वीकृति पर अपमानित महसूस करेगा?

राजा का अपमान या नीचा दिखाए जाना

दूसरी बार भेजे गए और दास किसका प्रतीक होंगे और इतिहास में इसकी क्या प्रतिक्रिया थी?

यह मेरा विश्वास है कि दूसरी बार भेजे गए और दास सुसमाचार को येरूशलेम और यहूदिया और सामरिया के बाहरी क्षेत्र में सुसमाचार पहुँचाने वाले प्रेरितों और अन्य शिष्यों को दर्शाते हैं। परमेश्वर द्वारा प्रेम की पेशकश के जवाब में बुझे मन से दिए बहाने मिले:

⁵परन्तु वे उपेक्षा करके चल दिए: कोई अपने खेत को, कोई अपने व्यापार को। ⁶औरों ने जो बच रहे थे उसके दासों को पकड़कर उनका अनादर किया और मार डाला।

यीशु मंदिर के क्षेत्र में ही इस दृष्टान्त के शब्दों को बता रहा था। उनके चारों ओर वह धार्मिक अग्वे थे जो उनके अनुग्रहकारी शब्दों के प्रति प्रतिरोधी थे। वह विवाह के भोज के दृष्टान्त से पहले ही दो और दृष्टान्तों को बाँट चुका है (मत्ती 21: 23-46)। उनके बहानों को लेकर उसके शब्दों ने उनके हृदय को छेदा होगा क्योंकि उसके द्वारा कहे जाने वाले दृष्टान्त सच्चाई के बहुत करीब थे।

अक्सर आज के समय में, सुसमाचार के दावों और पुकार को कई अलग-अलग बहानों से नकार दिया जाता है। उदाहरण के लिए, कुछ लोग हृदय के मुद्दों से पहले अपना व्यवसाय और जीवन के कार्यों को रखते हैं। वे कहते हैं "मैं बहुत व्यस्त हूँ," । वे कभी भी खेल-कूद, या सोशल मीडिया या फिल्मों आदि के लिए बहुत व्यस्त नहीं लगते। आज कई लोग तकनीक से जुड़े रहने के जुनून से ग्रस्त हैं। उन्हें हर समय "जुड़ा हुआ" होना चाहिए। मैं उन्हें "स्क्रीनऐजर्स" कहता हूँ। यह प्रवृत्ति सभी उम्र के लोगों में होती है, लेकिन युवा संस्कृति में यह बेहद प्रचलित है। यह उन लोगों को संदर्भित करता है, जो आत्मिक मुद्दों सहित किसी और बात से मतलब रखने के लिए अपने मोबाइल फोन या लैपटॉप से थोड़े लंबे समय तक भी दूर नहीं रह सकते। हम अपने समय की बातों में इतना खोए हो सकते हैं, कि हम अनंतकाल की बातों को भूल जाते हैं।

यह एक सत्य है, कि यदि आप व्यायाम नहीं करते हैं, तो आपकी मांसपेशियाँ कमज़ोर हो जाएँगी। हमारे आत्मिक जीवन के साथ भी ऐसा ही है। हमें आत्मिक प्राणी बनाया गया है, परमेश्वर के प्रति जीवित होने के लिए। अगर हम उसके वचन को सुनने के द्वारा अपना ध्यान आत्मिक मुद्दों पर न लगा परमेश्वर के प्रति जीवित नहीं हैं, तो परमेश्वर के पवित्र आत्मा के

प्रति हमारी संवेदनशीलता कम होते हुए नष्ट हो जाएगी। आपके प्राण का शत्रु चाहता है कि आप अपनी आत्मिक ज़रूरत के विषय में निष्क्रिय हो सोते रहें।

सौभाग्य से हमारी आत्मा के लिए, हमें मसीह की आवश्यकता के लिए जागरूक करने के लिए परमेश्वर परीक्षाओं, कठिनाइयों और कष्टों का उपयोग करता है और हमें उस स्थान तक लाता है जहाँ हम मसीह को देखना शुरू करेंगे। दुनिया भर में इस जागृति के लिए क्या करना होगा? यह बहुत संभव है कि जो बातें लोगों को उनकी ज़रूरत के प्रति जागृत करेंगी, वह वो बातें हैं जो समय के अंत में होने वाली हैं और जिनके विषय में भविष्यवाणी की गई है:

¹⁰“जाति पर जाति और राज्य पर राज्य चढ़ाई करेगा। ¹¹और बड़ें-बड़ें भूकंप होंगे, और जगह जगह अकाल और महामरियाँ पड़ेंगी, और आकाश से **भयंकर बातें** और बड़े-बड़े चिन्ह प्रगट होंगे। ¹²परन्तु इन सब बातों से पहले वे मेरे नाम के कारण **तुम्हें पकड़ेंगे, और सताएंगे**, और पंचायतों में सौपेंगे, और बन्दीगृह में डलवाएंगे, और राजाओं और हाकिमों के सामने ले जाएंगे। ¹³पर यह तुम्हारे लिये गवाही देने का अवसर हो जाएगा। ²⁶ **भय के कारण** और संसार पर आनेवाली घटनाओं की बाँट देखते देखते **लोगों के जी में जी न रहेगा** क्योंकि आकाश की शक्तियाँ हिलाई जाएँगी। (लूका 21:10-13,26)

जबकि उसके दासों की हत्या हो रही है, परमेश्वर निष्क्रिय नहीं रहेगा। इस दृष्टान्त में राजा ने अपने दासों की हत्या पर प्रतिक्रिया हत्यारों को नष्ट कर उनके शहर को जलाने के द्वारा दी। (मत्ती 22:7) कलीसिया के शुरुआती वर्षों में सताए और मार दिए गए सभी लोगों के आंकड़े हम नहीं जानते। हमें केवल स्तिफुनुस और याकूब के विषय में बताया गया है जो शहीद हुए थे और फिर उसके बाद सताव आया था (प्रेरितों 8:1-3)। इतिहास हमारे लिए मसीह के क्रूस पर चढ़ाये जाने के सैंतीस वर्ष बाद रोमियों द्वारा यरूशलेम के विनाश को दर्ज करता है। परमेश्वर के दासों और उनके परिवारों पर आया सताव इज़रायल में राजनीतिक और धार्मिक वर्गों पर न्याय लेकर आया। आज भी, दुनिया भर में, मसीह के सुसमाचार का प्रचार करने वालों को सताया जा रहा है और उनकी हत्या की जा रही है।

⁸तब उसने अपने दासों से कहा, ‘विवाह का भोज तो तैयार है, परन्तु निमंत्रित लोग योग्य न ठहरे। ⁹इसलिये चौराहों में जाओ, और जितने लोग तुम्हें मिलें, सब को विवाह के भोज में बुला लाओ।’ ¹⁰सो उन दासों ने सड़कों पर जाकर क्या बुरे, क्या भले, जितने मिले, सब को इकट्ठा किया; और विवाह का घर अतिथियों से भर गया।

जब राष्ट्र के अगवों ने दोनों निमंत्रणों को अस्वीकार कर दिया, तब परमेश्वर अन्यजातियों को राज्य में लेकर आया, वह जिन्हें बाहरी लोग समझा जाता था। समय की शुरुआत से ही परमेश्वर

की यही योजना थी कि यहूदी लोग परमेश्वर के वचन की सुरक्षा के लिए सावधानीपूर्वक ध्यान देंगे और सभी लोगों के लिए परमेश्वर के प्रेम का संदेश सामने लाएंगे, न कि केवल एक ही राष्ट्र के लिए। अन्यजातियों के साथ परमेश्वर के सुसमाचार का बाँटा जाना मसीह के संदेश का विरोध करने वालों को हजम नहीं हुआ। जब शाऊल जो प्रेरित पौलुस बन गया था, मंदिर के बाहर यहूदी लोगों को उपदेश दे रहा था, तो वह परमेश्वर के स्वयं उसपर प्रकट होने के द्वारा उसके रूपांतरण के अनुभव को सुनने में ठीक थे, लेकिन जब पौलुस ने उन्हें बताया कि प्रभु ने उसे अन्यजातियों में जा उन्हें भोज के लिए के बुलाने के निर्देश दिया था, यह बात उनके लिए अस्वीकार्य थी। यही वह समय था जब उन्होंने ऐसी बात कहने के लिए उसे मारने की कोशिश की:

20 और जब तेरे गवाह स्तिफनुस का लहू बहाया जा रहा था तब मैं भी वहाँ खड़ा था, और इस बात में सहमत था, और उसके घातकों के कपड़ों की रखवाली करता था। **21** “और उसने मुझ से कहा, **‘चला जा: क्योंकि मैं तुझे अन्यजातियों के पास दूर-दूर भेजूँगा।’**” **22** **वे इस बात तक उसकी सुनते रहे: तब ऊँचे शब्द से चिल्लाए,** “ऐसे मनुष्य का अन्त करो; उसका जीवित रहता उचित नहीं।” (प्रेरितों 22:20-22)

पौलुस को एक मुश्किल कार्य के लिए बुलाया गया था। यह उनके समय के लोगों के बीच एक लोकप्रिय संदेश नहीं था। उसे अन्यजातियों के बीच सुसमाचार के शुभ सन्देश का प्रचार करने के लिए भेजा गया था। उस समय, कलीसिया में इस बात को लेकर बहुत विवाद था कि यह निमंत्रण किसके लिए था! प्रेरित यह पा रहे थे कि परमेश्वर का इरादा सभी लोगों को आमंत्रित करना था, न कि केवल उन लोगों को जिन्हें वे परमेश्वर के राज्य के लिए उपयुक्त मानते थे। एक बार फिर, उनका संसार को देखने का दृष्टिकोण को पलटा जा रहा था। हम में से उनको जो गैर-यहूदी मसीही हैं, आभारी होना चाहिए, जैसे पौलुस ने कहा:

“हे भाइयों, कहीं ऐसा न हो, कि तुम अपने आप को बुद्धिमान समझ लो; इसलिये मैं नहीं चाहता कि तुम इस भेद से अनजान रहो, कि जब तक अन्यजातियाँ पूरी रीति से प्रवेश न कर लें, तब तक इस्त्राएल का एक भाग ऐसा ही कठोर रहेगा। और इस रीति से सारा इस्त्राएल उद्धार पाएगा” (रोमियों 11:25-26)

पौलुस यह कह रहा है कि इस्त्राएल एक समय के लिए सच्चाई के प्रति कठोर है, लेकिन यह भलाई उत्पन्न करेगा क्योंकि तभी राज्य का संदेश सभी के लिए दिया गया। पौलुस को उस समय का भी इंतजार है जब इसराइल पुनः स्थापित किया जाएगा और परमेश्वर की नई वाचा को स्वीकार करेगा (यिर्मयाह 31:31)। हमें अवश्य मसीह के लिए इतना जीवित और एक दूसरे

के प्रति प्रेम से ऐसा भरा होना चाहिए कि हम दूसरों में ईर्ष्या भड़काएं, यहूदियों और अन्यजातियों में समान रूप से, कि उनका भी उसी प्रकार का जीवन हो। हमें कभी भी यह सोचने की गलती नहीं करनी चाहिए कि परमेश्वर ने यहूदी लोगों को छोड़ दिया है। नहीं, पौलुस हमें बताता है कि एक समय आएगा जब वे परमेश्वर के अनुग्रह के विषय में सुन कर अपना प्रतिउत्तर देंगे। पौलुस लिखता है कि जब वह समय आएगा, तब यहूदी और अन्यजाति लोग एक साथ कलीसिया में महान आत्मिक समृद्धि का एक समय लाएंगे:

“सो मैं कहता हूँ: क्या उन्होंने इसलिये ठोकर खाई, कि गिर पड़े? कदापि नहीं! परन्तु उनके गिरने के कारण अन्यजातियों को उद्धार मिला, कि उन्हें जलन हो। सो यदि उनका गिरना जगत के लिये धन और उनकी घटी अन्यजातियों के लिये सम्पत्ति का कारण हुआ, तो उनकी भरपूरी से क्या कुछ न होगा।” (रोमियों 11:11-12)

पौलुस एक बार फिर से यहूदियों के बीच जागृति के समय की प्रतीक्षा कर रहा है, जो इज़रायल के पुनः स्थापित होने पर सभी को आशीषित करेगा। यह अंतर इतना नाटकीय होगा कि इसे केवल जीवन और मृत्यु के बीच के अंतर के रूप में वर्णित किया जा सकता है:

“क्योंकि जबकि उनका त्याग दिया जाना जगत के मिलाप का कारण हुआ, तो क्या उनका ग्रहण किया जाना मरे हुआँ में से जी उठने के बराबर न होगा? (रोमियों 11:15)

क्या होगा वह दिन! यह परमेश्वर की दया का उंडेला जाना होगा जो कलीसिया के लिए मरे हुआँ में से जीवित होने की तरह प्रतीत होगा। परमेश्वर के राज्य में घमंड या उत्कृष्टता के लिए कोई जगह नहीं है। हमें उसके महान प्रेम और दया के कारण ही विवाह भोज के लिए बुलाया जाता है, न कि ऐसे कुछ के लिए जो हम मेज पर लेकर आते हैं। उसकी महान योजना में, उसने सभी को आमंत्रित किया है।

क्या आप वचन में ऐसे उदाहरणों के बारे में सोच सकते हैं जब यीशु उन लोगों तक पहुँचा जिन्हें दूसरों द्वारा तुच्छ जाना जाता था? क्या आपको लगता है कि आज भी हमारी अपनी मान्यताओं के कारण कुछ लोगों को छोड़ देना संभव है? चर्चा करें।

बिना विवाह के वस्त्र वाला मनुष्य

¹¹जब राजा अतिथियों के देखने को भीतर आया; तो उस ने वहाँ एक मनुष्य को देखा, जो विवाह का वस्त्र नहीं पहिने था। ¹²उसने उससे पूछा, ‘हे मित्र; तू विवाह का वस्त्र पहिने बिना यहाँ क्यों आ गया?’ उसका मुँह बन्द हो गया। ¹³तब राजा ने सेवकों से कहा, ‘इस के हाथ-

पाँव बान्धकर उसे बाहर अन्धियारे में डाल दो, वहाँ रोना, और दांत पीसना होगा।' ¹⁴क्योंकि बुलाए हुए तो बहुत हैं परन्तु चुने हुए थोड़े हैं।" (मत्ती 22:11-14)

पद 11-12 में, आपको क्या लगता है कि विवाह के वस्त्र किस बात/ चीज़ का प्रतीक हैं?

अब हमें राजा के विवाह के उत्सव में आने के बारे में बताया गया है कि वो वहाँ एक ऐसे मनुष्य को देखता है जिसने विवाह के वस्त्र नहीं पहने हैं। पलिशती देश में शिमशोन की शादी की कहानी में हमें विवाह में आमंत्रित अतिथियों को मलमल के वस्त्र देने की प्रथा के बारे में बताया गया है (न्यायियों 14:10-13)। शिमशोन की घटना में उसने एक पहेली प्रस्तुत करते हुए प्रथा से बाहर निकलने की कोशिश की।

हमारे दृष्टान्त में, इस प्रथा को संदर्भित किया गया है। दृष्टान्त में राजा परमेश्वर का प्रतीक है जो विवाह के अतिथियों को धार्मिकता का वस्त्र उपलब्ध कराता है। विवाह के भोज में कोई भी ऐसा नहीं होगा जो अन्य लोगों की तुलना में बेहतर वस्त्र पहने हो -- हम सब परमेश्वर की धार्मिकता पहने मसीह यीशु में एक होंगे:

मैं यहोवा के कारण अति आनन्दित होऊंगा; मेरा प्राण परमेश्वर के कारण मगन रहेगा; क्योंकि उसने मुझे उद्धार के वस्त्र पहिनाए, और धर्म की चदर ऐसे ओढ़ा दी है जैसे दूल्हा फूलों की माला से अपने आपको सजाता और दुल्हिन अपने गहनों से अपना सिंगार करती है। (यशायाह 61:10)

इस मनुष्य के उचित वस्त्र न होना इस बात को दर्शाता है कि उसने जानबूझकर उसके लिए राजा के प्रावधान को अस्वीकार कर दिया है। यह उन लोगों की तुलना से अधिक अपमान है जो शादी में आने से इनकार कर देते हैं। इस व्यक्ति ने राजा के सभी मेहमानों की उपस्थिति में उसका अपमान करने का चुनाव किया है। वह उन लोगों का प्रतीक है, जो परमेश्वर द्वारा दिए धार्मिकता के वस्त्रों के प्रावधान को पहनने से इनकार करते हैं (यशायाह 61:10)। दृष्टान्त के का यह भाग उन यहूदियों के विषय में बात करता है जो उसके बोलने के समय मसीह के चारों ओर खड़े रहते थे, विश्वासी होने का ढोंग करते हुए, लेकिन उसके ही शब्दों में उसे फंसाने की कोशिश में लगे हुए (मत्ती 2:15)। यह उन लोगों की भी तस्वीर है जो सोचते हैं कि वह विश्वासी हैं; लेकिन, उन्होंने वास्तव में सच्चाई से कभी भी आत्मा द्वारा नए सिरे से जन्म लेते हुए (यहून्ना 3:3) पुत्र को अपना जीवन समर्पित नहीं किया है। दुःख की बात यह है, कि उन्हें बहुत देर से पता चलेगा कि उनकी आशा मसीह की चट्टान (मत्ती 7: 24-27) के बजाय रेत पर बनाई गई थी।

आमंत्रित तो कई, पर कुछ ही चुने हुए

बहुत से लोगों को “सामान्य बुलावे” के द्वारा आमंत्रित किया गया है जो सुनने वाले सभी लोगों के लिए है। यह बुलावा मसीह में पश्चाताप और विश्वास करने की पुकार है। कई सुनेंगे लेकिन कुछ ही प्रतिउत्तर देंगे। यीशु ने कहा, ¹³सकेत फाटक से प्रवेश करो क्योंकि चौड़ा है वह फाटक और सरल है वह मार्ग जो विनाश को पहुँचाता है, और बहुत हैं जो उससे प्रवेश करते हैं। ¹⁴क्योंकि सकेत है वह फाटक और सकरा है वह मार्ग जो जीवन को पहुँचाता है, और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं। (मत्ती 7:13-14)

वह सभी जो इस बुलावे का प्रतिउत्तर देंगे, वे लोग हैं जिन्हे परमेश्वर ने पहले से ही देख लिया है कि वह प्रतिउत्तर देंगे। जो लोग प्रतिउत्तर देते हैं और पश्चाताप करते हैं (अपने मनो और हृदयों को बदलते हैं) जगत की नींव से पहले ही परमेश्वर द्वारा चुने गए हैं:

³हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, कि उसने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आशीष दी है। ⁴जैसा उसने हमें जगत की उत्पत्ति से पहिले उसमें चुन लिया, कि हम उसके निकट प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों। ⁵और अपनी इच्छा की सुमति के अनुसार हमें अपने लिये पहिले से ठहराया, कि यीशु मसीह के द्वारा हम उसके लेपालक पुत्र हों। (इफिसियों 1:3-5)

³⁴तब राजा अपनी दहिनी ओर वालों से कहेगा, “हे मेरे पिता के धन्य लोगों, आओ, उस राज्य के अधिकारी हो जाओ, जो जगत के आदि से तुम्हारे लिये तैयार किया गया है।” (मत्ती 25:34)

रुथेना मेट्रज़गर का एक अनुभव हुआ जिसके द्वारा मैं इस अध्ययन को समाप्त करना चाहता हूँ (कॉपीराइट रुथेना मेट्रज़गर, *स्वर्ग* पुस्तक से, द्वारा रैंडी अलकॉर्न)। मैं स्वयं के शब्दों को लिखता हूँ:

"एक पेशेवर गायक के रूप में, एक विवाह में गाने के लिए कहा जाना असामान्य नहीं था, लेकिन एक करोड़पति की शादी में गाना थोड़ा असामान्य था। मैं जानती थी कि विवाह पूर्णतः संपन्न होगा और मैं इसमें भाग लेने में प्रसन्न थी, लेकिन जब विवाह के स्वागत समारोह का निमंत्रण आया तो मुझे ज्ञात हो गया कि यह कुछ असाधारण होगा। विवाह का स्वागत समारोह सिएटल के कोलंबिया टॉवर के शीर्ष दो मंजिलों पर आयोजित किया गया था, उत्तर-पश्चिमी अमरीका की सबसे ऊँचे गगनचुंबी इमारत में, और यह मेरी कल्पना की तुलना से काफी अधिक अद्भुत था। वहाँ पर बैरे आकर्षक काले सूट-बूट पहने सबसे चुनिन्दा

स्वादिष्ट नाश्ते और विदेशी पेय पदार्थों की पेशकश के रहे थे। वहाँ का वातावरण सुघड़ता सुविज्ञ था। करीब एक घंटे की मस्ती-मज़े के बाद दुल्हन और दूल्हा एक सुंदर कांच और पीतल की सीढ़ी की ओर बढ़ने लगे जो शीर्ष मंजिल तक जा रही थी। एक मखमली फीता, जो सीढ़ियों के नीचे लिपटा हुआ था, काटा गया और घोषणा की गई कि विवाह का भोज आरंभ होने वाला है। दुल्हन और दूल्हा सीढ़ियों पर चढ़ गए और मेहमान उनके पीछे आए। उसका हिस्सा होने के लिए, क्या भव्य कार्यक्रम था।

जब हम सीढ़ियों के ऊपर पहुँचे, एक सुंदर पुस्तक के साथ खड़े एक सज्जन ने हमारा अभिनन्दन किया। क्या "मैं आपका नाम जान सकता हूँ?" "मैं रुथेना मेट्ज़गर हूँ और यह मेरा पति, रॉय मेट्ज़गर हैं," मैंने उत्तर दिया। सज्जन ने पुस्तक खोजी। मुझे "यह नहीं मिल रहा है। क्या आप कृपया इसका उच्चारण करेंगे?" मैंने उसका धीरे-धीरे और स्पष्ट रूप से उच्चारण किया। पूरे पुस्तक में खोजते हुए सज्जन ने देखा और कहा, "मुझे क्षमा करें, लेकिन आपका नाम यहाँ नहीं है। आपका नाम यहाँ होना ज़रूरी है, इसके बिना आप इस उत्सव में शामिल नहीं हो पाएंगे। "ओह, कुछ गलती हो गई होगी," मैंने उत्तर दिया "मैं गायिका हूँ और मैंने इस शादी के लिए गाया है!" सज्जन ने शांति से उत्तर दिया, "इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप कौन हैं या आपने क्या किया, किताब में आपके नाम के बिना आप इस भोज में उपस्थित नहीं हो सकते।" जब मैंने कमरे के चारों ओर देखा, क्षणिक तौर पर मेरे मन में आया कि मैं दूल्हे के पास दौड़ कर जाऊँ और इस मुद्दे को सुलझाने की माँग करूँ, लेकिन अपने पीछे सीढ़ियों पर सैकड़ों मेहमानों और दुल्हन और दूल्हे की इच्छा के अनुसार सभी मेज़ों पर हर एक जगह पहले से किसी को दिए जाने के कारण मैं चुप खड़ी रही। पुस्तक के साथ खड़े सज्जन ने एक वेटर को इशारा किया और कहा; "इन लोगों को लिफ्ट का रास्ता दिखाएं। हम "तंदूरी चिकन, पनीर टिक्का और यहाँ तक कि बर्फ पर तराशी आकृतियों द्वारा खूबसूरती से सजाई मेज़ों के बीच से होते हुए वेटर के पीछे चल दिए। भोज के क्षेत्र के निकट एक ऑर्केस्ट्रा था, जिसके सभी सदस्य चमकदार सफेद सूट-बूट पहने, अपने शानदार संगीत से कमरे को परिपूर्ण करने की तैयारी कर रहे थे।

हमें लिफ्ट तक ले जाया गया, हमने उसमें कदम रखा, और फिर बैरे ने गैराज के लिए "जी" का बटन दबाया। मेरे पति ने, समझदारी दिखाते हुए, एक भी शब्द नहीं कहा, और न ही मैंने। जब रॉय कोलंबिया टॉवर के गैराज से गाड़ी बाहर निकाल आगे चलने लगे, हम दोनों चुप रहे। चुप्पी में कई मील की दूरी तय करने के बाद, रॉय ने कोमलता से अपना हाथ मेरे कंधे पर रखा। "प्रियसी, क्या हुआ?" और फिर मुझे याद आया: "जब विवाह के स्वागत

समारोह का निमंत्रण मेरे पास पहुँचा था तब मैं बहुत व्यस्त थी और मैंने उत्तराकांक्षी का जवाब देने की परवाह नहीं की। आखिरकार, मैं तो गायिका थी, निश्चित रूप से मैं उत्तराकांक्षी का जवाब दिए बिना भी रिसेप्शन पर जा सकता थी! "

जब हम आगे बढ़े, मैं रोने लगी। मैं इसलिए नहीं रो रही थी कि मैंने अपने जीवन के सबसे भव्य भोज में शामिल होना गँवा दिया था, लेकिन मैं इसलिए रो रही थी क्योंकि अचानक मुझे एहसास हुआ था कि लोगों के लिए यह कैसा होगा जब एक दिन वे स्वर्ग के प्रवेश द्वार पर खड़े होंगे: वह लोग जो मसीह के स्वर्गीय भोज के निमंत्रण का प्रतिउत्तर देने के लिए बहुत व्यस्त थे। वह लोग जिन्होंने यह मान लिया है कि उन्होंने जो अच्छी चीजें की हैं, यहाँ तक कि कलीसिया में शत प्रतिशत उपस्थिति या कलीसिया में गाना, स्वर्ग में प्रवेश पाने के लिए पर्याप्त होगा। वह लोग जो लोग मेमने की जीवन की पुस्तक में अपना नाम ढूँढ़ेंगे और उसे वहाँ नहीं पाएंगे। लोग जो अपने पापों को क्षमा पाने और उसे अपने हृदय में स्वीकारने के मसीह के अनुग्रहशील निमंत्रण का जवाब देने के लिए समय नहीं रखते थे। और फिर मैं फिर से रोने लगी, क्योंकि मैं बहुत आभारी थी कि मैंने कई साल पहले मसीह को अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार कर लिया था और मुझे इस बात का विश्वास है कि मेरा नाम सबसे महत्वपूर्ण पुस्तक में लिखा गया है: मेमने की जीवन की पुस्तक। क्या आपका नाम लिखा है?"

फिर मैंने छोटे बड़े सब मरे हुआँ को सिंहासन के सामने खड़े हुए देखा, और पुस्तकें खोली गईं; और फिर एक और पुस्तक खोली गईं; अर्थात् जीवन की पुस्तक; और जैसे उन पुस्तकों में लिखा हुआ था, वैसे ही उनके कामों के अनुसार मरे हुआँ का न्याय किया गया। (प्रकाशितवाक्य 20:12)

मुझे निमंत्रण के बारे में स्पष्ट होने दीजिए। याद दिला दूँ, आमंत्रण *सभी* को भेजा गया है। अगर हम केवल उन बातों को समझ सकें जो परमेश्वर ने उन लोगों के लिए तैयार की हैं जो उससे प्रेम करते हैं, तो हममें से कोई भी विवाह के इस भोज में न आने के लिए कोई बहाना नहीं ढूँढ़ पाएंगे। विलियम बार्कले, एक प्रसिद्ध धर्मशास्त्रज्ञ, ने कहा है, "मसीही जीवन एक ही साथ में विशेषाधिकार, जिम्मेदारी और महिमा का निमंत्रण है। और इसके साथ ही, खौफ दिलाने वाली यह सोच भी है कि जीवन में त्रासदी परमेश्वर के इस निमंत्रण को अस्वीकार करने में है।"

प्रार्थना: पिता, मैं अब बिना और बहानों के तेरे पास आता हूँ। धन्यवाद कि आप मुझसे प्रेम करते हैं और आपने मेरे पापों को ढाँपने के लिए मुझे वस्त्रों के रूप में मसीह की धार्मिकता का प्रावधान दिया है। मुझे अपने पुत्र में नया बनाएं। मैं इस नए जीवन को प्राप्त करना चाहता हूँ

जो आप मुझे दे रहे हैं। मैं अपने पापों की क्षमा मांगते हुए, आपकी ओर मुड़ रहा हूँ। मैं आपके सम्मुख घुटने टेकता हूँ और जो कुछ आप मुझ में करना चाहते हैं उसे प्राप्त करते हूँ। आमिन!

कीथ थॉमस

निःशुल्क बाइबिल अध्यन के लिए वेबसाइट: www.groupbiblestudy.com

ई-मेल: keiththomas7@gmail.com